अनुराग पाठक

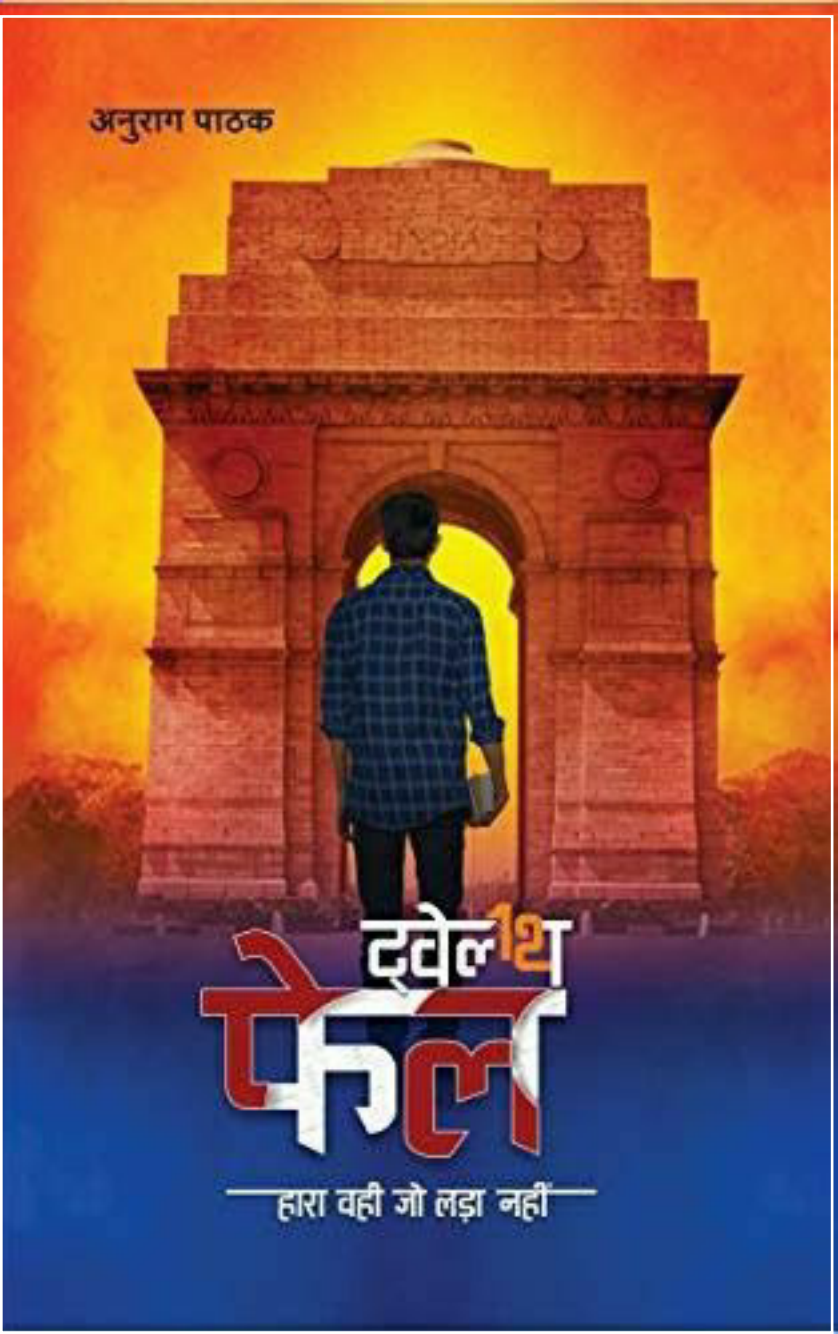

ट्वेल्थ फेल

हारा वही जो लड़ा नहीं

सनी सरोज

द्वेल्थ फेल

ड्राफ्ट 18

-अनुराग पाठक

1.

मार्च की एक सुबह थी। रात भर मक्खियाँ कहीं दुबकी हुई थीं। पर उजाला होते ही फिर से भिनभिनाने लगीं। घर की छत पर सो रहे मनोज की नींद मक्खियों के बार बार भिनभिनाने से खुल गई। उसका दोस्त विष्णु अपनी छत पर गणित के सवाल हल कर रहा था। गणित के सवाल तो मनोज को भी हल करने चाहिए, क्योंकि आज कक्षा बारह का पहला पेपर गणित का ही है, लेकिन उसे गणित के सवाल बिलकुल समझ नहीं आते। फिर भी उसने पास पड़ी गणित की किताब उठाई और पढ़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन कुछ ही देर में वह समझ गया कि इस तरह किताब पकड़े रहने का कोई लाभ नहीं।

मनोज अपनी तारीफ़ से बहुत उत्साहित होता है इसलिए जब उसने देखा कि उसके घर के सामने के कुँए पर मोहल्ले की महिलायें पानी भर रही हैं, तो उन्हें प्रभावित करने के लिये वह छत पर टहलते हुए गणित के सवाल ऊँची आवाज में पढने लगा। महिलाओं तक उसकी आवाज पहुँच गई ।

एक महिला उसकी तरफ इशारा करके बोली - "हमारो मोड़ा बिलकुल ना पढ़त। एक मनोज है, रात भर छत पे लालटेन से पढ़त रहतो।"

मनोज का उद्देश्य पूरा हुआ, अपनी तारीफ़ सुनकर वह खुश हो गया। उसने गणित की किताब नीचे रख दी और गुलशन नंदा का उपन्यास 'जलती चट्टान' खोल लिया। रात को एक बजे तक लालटेन की रोशनी में पढ़ने के बाद भी उसके क्लाइमेक्स के दो पेज रह गए थे। उसने दस मिनिट में उपन्यास पूरा किया और बाहर कुँए पर आ गया। महिलायें अभी भी पानी भर रही थीं ।

एक बुजुर्ग महिला को कुँए से बाल्टी खीचने में बहुत कष्ट होता था। मनोज ने उसका कष्ट देखकर उसकी बाल्टी भर दी।

पुरस्कार में उसे महिला का आशीर्वाद प्राप्त हुआ -"लल्ला तू फस्ट से पास होयगो।"

तब तक उसके सहपाठी विष्णु के पिता पण्डित कालीचरण कुँए पर आ गये। गाँव के स्कूल में कक्षा आठ तक गणित पढ़ाने वाले पंडित कालीचरण मनोज और उसकी योग्यता को अच्छे से जानते थे।

उसे देखते ही पण्डित जी बोल पड़े - "परीक्षा की तैयारी कैसी है मनोज? गणित में पास होना मजाक नहीं है।"

फिर पण्डित जी ने अपने बेटे विष्णु की तारीफ करना शुरु की - "मैंने तो विष्णु से कह दिया है कि फर्स्ट डिवीजन से पास नहीं हुआ तो मैं तो उसकी पढ़ाई बन्द करा दूंगा। पर मैं जानता हूँ विष्णु गणित में हुशियार है। उसके मन में ही पढ़ने की लगन है। "

मनोज इस सच्चाई को नकार नहीं सका। उसने पण्डित जी की मदद के उद्देश्य से उनके हाथ से पानी की बाल्टी ले ली और उनके साथ साथ चलने लगा।

उसने पण्डितजी से उनके बेटे की तारीफ़ की -"ताऊ विष्णु जैसा हुशियार लड़का तो पूरे जिले में नहीं है। मुझे तो पूरा भरोसा है कि वो इस बार जिले में फर्स्ट आयेगा।" यह कहते हुए मनोज की आँखों के सामने

उसके पिता की धुंधली छवि आई और फिर अचानक विलीन हो गई। हल्की टीस उदासी के रंग में उसके चेहरे पर दिखाई दी।

2 .

मुरैना जिला मुख्यालय से तीस किलोमीटर दूर जौरा तहसील से सटे बिलग्राम में दिन की शुरुवात हो चुकी थी। सामान्य सा यह दिन नया सिर्फ इस बात में था कि आज गाँव के कुछ लड़के लड़कियाँ द्वेल्थ का पहला पेपर देने जा रहे थे। मनोज जब पण्डित जी को उनके घर छोड़कर वापस आया तो उसकी माँ अपने घर के दरवाजे पर दो महिलाओं के साथ बातचीत में मग्न थी।

मनोज द्वारा बुलाये जाने पर माँ ने इशारे से कह दिया -"रुक जा आती हूँ।"

वह जानता था कि माँ से वार्तालाप जल्दी खत्म करके आने की उम्मीद करना व्यर्थ है।इसलिए वह तैयार होकर परीक्षा देने के लिए निकल गया।

बेटे को तैयार होकर जाते हुए देख माँ देहरी पर बैठे बैठे बोली -"रुक जा मोड़ा,रजनी ने रोटी ना बनाई का? ।खाली पेट पेपर देबे मत जा।"

माँ ने रोटी बनाने का काम पन्द्रह साल की बेटी रजनी को सौंप दिया था और खुद को चर्चाओं में व्यस्त कर लिया था। मनोज की भूख आज मर चुकी थी। उसने गणित की गाइड हाथ में ले ली और बिना कुछ कहे घर से निकल गया। माँ फिर से चर्चा के काम में व्यस्त हो गई।

यह गाँव तहसील को जिले से जोड़ने वाली सड़क के किनारे पर बसा था। इसलिए आवागमन की सुविधा से भाग्यशाली था।हर दस मिनिट में मुरैना से जौरा और जौरा से मुरैना आने जाने वाली बसें इस गाँव से गुजरती थी। सुबह के नौ बजे बिलग्राम की पुलिया पर सवारियों की भीड़ बढ़ने लगी। मनोज पुलिया के पास बने हनुमान जी के मन्दिर में हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। वह हनुमान जी की मूर्ति के सामने बुदबुदाया –"हे हनुमान जी गणित में बेड़ा पार लगा देना, तुम्हारा ही सहारा है ।"

हनुमान जी से गणित में पास कराने की प्रार्थना करके जब वह पुलिया पर आया तो वहां पहले से विष्णु और उसके पिता पण्डित कालीचरण बस का इंतज़ार कर रहे थे ।

पुलिया पर बैठे एक लड़के ने पंडित कालीचरण से पूछा -"पण्डित जी क्या विष्णु को नकल कराने जा रहे हो जौरा?"

पण्डित जी विष्णु को परीक्षा दिलाने ले जा रहे थे। इस तरह का व्यंग्य सुनकर उन्हें पीड़ा हुई।

पण्डित जी नारजगी के स्वर में बोले-"न तुम लोगों ने कभी स्कूल का मुंह देखा, न हीं किताबें पढीं । तुम लोग क्या जानो पढ़ाई क्या होती है?"

इतना कहकर पण्डित जी ने अपनी नजर घुमाकर उस दिशा की ओर कर ली जहां से बस आने वाली थी।हार मानना इस गाँव में किसी ने नहीं सीखा था। पुलिया पर बैठे लड़के पण्डित जी के द्वारा किये गए अपमान से तिलमिला गए।

"पढ़के ना थानेदार होत कोउ,मास्टर बनके ऐसेई स्कूल में गिनती पहाड़े बुलवायंगे।"- उनमे से एक लड़के ने सड़क के उस पार बने स्कूल की तरफ इशारा करके कहा।

मनोज ने देखा कि माहौल बिगड़ रहा है तो उसने लड़कों से कहा- "मास्टरी तो बड़ी नौकरी है, मेरी लग जाए तो मजा ही आ जाए।"

"पर उसके लिए ट्वेल्थ पास करना जरूरी है। तुम कैसे करोगे मनोज ? सुना है इस साल एसडीएम नकल नहीं होने देगा।" –एक दूसरे लड़के ने मनोज को नई जानकारी दी ।

मनोज को उम्मीद नहीं थी कि परीक्षा शुरु होने के पहले इस तरह की बुरी खबर सुनने को मिलेगी।लेकिन उसने अपने मन को दिलासा दिया कि नकल इस तरह से खत्म नहीं होगी।पिछले कई सालों से गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जौरा में नकल होती आई है। उसने अपनी दसवीं की परीक्षा भी नकल से पास की थी।

तभी धड़ धड़ करता हुआ एक टेम्पो पुलिया पर आकर रुक गया । मनोज का दोस्त बल्ले टेम्पो चला रहा था। तभी टेम्पो के पीछे बालाजी बस सर्विस की बावन सीटर बस भी पुलिया पर आकर रुक गई। बस में लगभग सत्तर सवारियां भरी हुई थी। फिर भी उसके बीस साल के दुबले पतले कंडेक्टर को बल्ले का तीन सवारियां अपने टेम्पो में बिठाना अखर गया।

कंडेक्टर ने बल्ले से दबंग और धमकी भरी आवाज में कहा-"क्यों रे कितनी सवारी बिठायगो रे! तीन सवारी एक्स्ट्रा बिठाए लइ हैं, उतार बिने, बे मेरी सवारी हैं।

पिछले कुछ महीनों से इस सड़क पर तीन चार टेम्पो चलने लगे थे। बस ऑपरेटर इस बढ़ती प्रतियोगिता से आहत थे। टेम्पो के कारण बसों को नुकसान होता था। इसलिए बस और टेम्पो के संघर्ष इस सड़क पर अब बढ़ने लगे थे।

"तू काम कर अपना ,जे मेरो गाँव है ,बस ना चल पावेगी तेरी।"-बल्ले अपने गाँव में शेर बन गया ।

लेकिन बालाजी बस का मालिक धन और राजनीति से ताकतवर था। आरटीओ और दरोगा सभी उसके इस प्रभाव को मानते थे। इसलिए उसका स्टाफ सीमा से अधिक सवारी ढोना अपना विशेषाधिकार मानता था।

विवाद बढ़ता देख गाँव के कुछ लोग भी टेम्पो के पास आ गए। गाँव में एकता दिखाने का अच्छा मौक़ा था यह। बस कंडक्टर अकेला पड़ गया । बस में बैठे ड्राइवर ने कंडक्टर को वापस बुला लिया था।

अधेड़ उम्र के ड्राइवर ने अपने अनुभव से यही सीखा था कि जब किसी गाँव में अकेले घिर जाओ तो वहां से भाग लेना ही सही रणनीति है। बाद में अपने इलाके में इस संघर्ष को घसीटकर लाने की कोशिश करनी चाहिए। कंडक्टर भुनभुनाता हुआ वापस बस में चला गया।

कंडक्टर बस के गेट से लटकते हुए बल्ले को चेतावनी देते हुए चिल्लाया-"जा सड़क पे टेम्पो चलावो भुला देंगो ,होश में रहिये।"

इस चेतावनी का जवाब बल्ले ने भी ऊँची आवाज में दिया – "गाँव में से बस ना निकाल पावेगो, ध्यान राखिये । " इतना कहकर बल्ले ने टेम्पो का टॉप गियर डाला और टेम्पो धड़ धड़ करता जौरा की और बढ़ गया ।

गाँधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के गेट के पास मनोज,विष्णु और पंडित कालीचरण उतर गये। मनोज और विष्णु स्कूल में चले गये और पंडित कालीचरण विष्णु को सुरक्षित स्कूल पहुंचा कर अपने किसी रिश्तेदार के घर की ओर रवाना हो गये।

गांधी स्कूल के संचालक जगत सिंह ने बहुत मेहनत के बाद द्वेल्थ बोर्ड परीक्षा का सेंटर अपने स्कूल में कराया था। जिस कारण उनके स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या क्षमता से अधिक बढ़ गई थी। विद्यार्थियों के झुण्ड भय आश्चर्य और आनन्द के मिले जुले भाव के साथ स्कूल में प्रवेश कर रहे थे । संचालक जगत सिंह अपने कमरे की खिड़की से आशीर्वाद की नजरों से इन झुंडों को देख रहे थे।

आज नकल कराने का जिम्मा गणित के शिक्षक दुबे जी पर था। नकल कराने के लिए प्रत्येक क्लास में जाना उनके लिए असुविधा का काम था ,इसलिए स्कूल के मैदान में टेंट लगा दिया गया था। नीचे टाट पट्टियां बिछाई गईं थीं,जिस पर परीक्षार्थी बैठ गये थे । मनोज घंटी बजने का इन्तजार करने लगा ।

घण्टी बज गई । पेपर बट गए ।मनोज ने पेपर को जमीन पर रख दिया और सभी के साथ अपने गणित के सर दुबेजी का इन्तजार करने लगा। दुबे जी ऑफिस में बैठकर प्रश्न पत्र हल कर रहे थे। एक प्रश्न हल करने के बाद उसे ब्लेकबोर्ड पर उतरवाना फिर दूसरे उत्तर की सप्लाई करना मेहनत का काम था।

अभी दुबे सर द्वारा दिया गया पहला उत्तर ब्लैक बोर्ड पर उतारा ही जा रहा था कि स्कूल के बाहर हलचल हुई । एक सफेद रंग की पीली बत्ती लगी बोलेरो स्कूल के कम्पाउंड में आकर रुक गई। पुलिस की वर्दी में पांच सिपाही सीधे परीक्षा वाले मैदान में पहुंच गए। पुलिस को देखकर दुबे सर पहले तो हड़बड़ाए फिर उन्हें लगा कि यह तो औपचारिक चेकिंग है जो हर साल पहले पेपर के दिन शासन द्वारा की जाती है,पर जब पुलिस के सिपाहियों ने लड़कों से गाइड,नकल की पर्चियां आदि लेकर एक बोरे में भरना शुरु किया तो दुबे को यह समझते देर नहीं लगी कि मामला गम्भीर है। दुबे जी ने घबराहट में बीड़ी सुलगा ली। वह ब्लैक बोर्ड डस्टर से साफ़ कर भाग लिए और स्कूल के संचालक जगत सिंह के पीछे खड़े हो गए। सभी विद्यार्थियों को भरोसा था कि दस मिनिट की कवायद के बाद पुलिस चली जायगी उसके बाद उत्तरों की सप्लाई फिर से शुरु हो जायगी। इसी भरोसे ने विद्यार्थियों ने धैर्य बनाये रखा था।

लेकिन दस मिनिट बीत गये और मामला सेटल नहीं हुआ तो विद्यार्थियों की बेचैनी बढ़ने लगी। उनके ऊपर फेल होने का खतरा मंडराने लगा।

आज के इस रंगमंच के केंद्र में खड़े एक युवक की ओर इशारा करते हुए एक लड़का बोला - "जे तो एसडीएम राघवेंद्र सिंह है।"

राघवेंद्र सिंह ने जगत सिंह से कहा -"आपको शर्म आनी चाहिए,आप खुले आम नकल करा रहे हैं।

घबराये हुए लड़के और अधिक घबरा गए। राघवेन्द्र सिंह के तेवर देखकर मनोज को लगा कि उसका यह साल तो गया। एक सरकारी अधिकारी की ताकत देखकर मनोज को आश्चर्य हो रहा था। एसडीएम का रौब रुतवा गजब का था। हमेशा अपनी दबंगई में रहने वाला जौरा थाने का थानेदार कुशवाह भी अपने से आधी उम्र के एसडीएम के सामने हाथ बांधे खड़ा था। लड़के एसडीएम को कोस रहे थे। जगत सिंह को समझ नहीं आ रहा था कि उनकी नकल की जमी जमाई सेटिंग एक एसडीएम ने कैसे बिगाड़ दी ? जगतसिंह ने स्कूली शिक्षा के जॉइंट डायरेक्टर को फोन लगाया और एसडीएम की करतूत गुस्से में कह सुनाई।

जॉइंट डायरेक्टर एसडीएम की कार्य प्रणाली से परिचित था उसने कहा -" राघवेंद्र सिंह का कोई इलाज नहीं है। ऐसे अधिकारी ही होते है जिन्हें जमी जमाई व्यवस्था को उजाड़ने में मजा आता है। जौरा के बुरे दिन आ गए।"

मैदान उजड़ गया। विद्यार्थी चले गये । कापियां खाली छूट गईं । पर जुझारु मनोज ने अपनी कॉपी खाली नहीं छोड़ी । उसने सुना था कि कॉपी भरने से भी पास हुआ जा सकता है।इसलिए उसने पेपर में पूछे गये सवालों को ही उत्तर पुस्तिका में बार बार लिख कर उसे भर दिया। वह प्रश्नों के बीच बीच में'इति सिद्धम्' लिखता जा रहा था, जिससे यदि चेकर चाहे तो वह 'इति सिद्धम्' मात्र पढ़कर उसे पास कर सकता है। अंत में उसने चेकर से निवेदन भी किया कि उसकी दादी का स्वास्थ खराब होने के कारण वह ठीक से पढ़ाई नहीं कर सका था ,इसलिए यदि उसे पास कर दिया जाय तो वह चेकर का हमेशा अहसान मानेगा।

3.

मनोज की परीक्षा का रिजल्ट अभी तक नहीं आया था। एक सुबह बल्ले के घर के दरवाजे पर गाँव में क्रिकेट खेलने वाले लड़के प्लानिंग कर रहे थे। मनोज भी इस समूह का अच्छा खिलाड़ी माना जाता था। वह शॉट मारने के लिए नहीं, बल्कि बॉल को रोकने में माहिर था। जब टीम जल्दी जल्दी आउट होती थी तब वह क्रीज पर जाकर विकेट गिरने से रोक सकता था।

बल्ले ने लड़कों से बोलना शुरु किया- "आज जौरा में टूर्नामेंट शुरु हो रहा है। सौ रुपये एंट्री फीस है। दस रुपये की बॉल आयगी। इसलिए सबको दस दस रुपये देने हैं।

मनोज ने मन ही मन सोचा -"दस रुपये कहाँ से आएंगे ?"

वह जानता था कि उसके लिए दस रुपये जुटाना इतना आसान नहीं है। मम्मी से मांगने पर भी उसे दस रुपये की कोई उम्मीद नहीं थी।पापा को गए सात महीने हो गये थे। सात महीने पहले अक्टूबर में पापा डिंडोरी से आये थे तब मम्मी को दस हजार रुपये दे गए थे। सात महीने में सब रुपये खर्च हो गए । मम्मी अब उधार मांग कर घर चला रही है। आज तक न पापा आये न ही उन्होंने तनख्वाह भेजी। बस इसी भरोसे घर चल रहा है कि

पापा के आने के बाद सब ठीक हो जायगा। क्रिकेट की मीटिंग में अचानक मनोज के सामने उसके घर की दीन हीन और जर्जर दशा का दृश्य आ गया।

घर में घुसने से पहले उसने देखा कि मम्मी पड़ोस की ताई से उनके उनके दरवाजे पर खड़े होकर बातें कर रही हैं। छोटा भाई दीपक घर में नहीं है या तो वह सड़क किनारे पुलिया पर बैठा होगा या बिना कहे किसी बस या टेम्पो में बैठकर जौरा निकल गया गया होगा। निरुद्देश्य आवारा घूमना ही उसका शौक है। उसने माँ को अंदर बुलाया। माँ की बैठक भी खत्म हो गई थी। उन्हें मजबूरन घर आना पड़ा।
उसने पूछा -"मम्मी दस रुपैया दे रही है क्या,मैच खेलबे जानो है ?”
मम्मी ने चिढ़ते हुए उत्तर दिया -"मुझ पे नहीं है पैसा। तेरे बाप ने तो सात महीना से मुंह ना
दिखाओ,मैं उधार मांग मांग के घर चलाये रही हों। कहाँ से लाऊँ पैसा?"
मम्मी, पापा को कोसती हुई अंदर कमरे में चली गई। मनोज को लग रहा था कि उसका खेलना अब मुश्किल है। लेकिन मन की निराशा को दूर करते हुए उसने किसी उम्मीद के भरोसे सफेद से मटमैले पड़ चुके कपड़े के जूते पहने और लगभग दौड़ते हुए बल्ले के घर के बाहर पहुँच गया। आत्मविश्वास से भरा मनोज टीम में सिलेक्शन की उम्मीद लिए तैयार होकर आ गया था।
जौरा के गांधी आश्रम मैदान पर टूर्नामेंट का आयोजन रखा गया था। टीम के बैठने और कमेंट्री के लिए एक टेंट लगा दिया गया था। पचास प्लास्टिक की कुर्सियां डाल दी गईं थीं । बारह लोगों की टीम में मनोज को छोड़कर सभी ने फीस दे दी थी इसलिए उसका नाम बारहवें खिलाड़ी के रूप में लिख दिया गया।
कमेंट्री की बागडोर जौरा के दयाल बेंड में गाना गानेवाले पप्पू सिंह के हिस्से में आई । उसने कमेंट्री करना शुरु की -
" हैलो माइक टेस्टिंग हैलो।मैच शुरु हो रहा है, मैच का मजा लेने वालों से गुजारिस है कि बैठ जाए। ए लाल शर्ट पिच पे मति चले,ए काली शर्ट वो गाय घुस रही है मैदान में जल्दी हटा।"-आँखों देखा वर्णन शुरु हो चुका था।
"मैच के मुख्य अतिथि एसडीएम साहब काम में फंसे है इसलिए वे बाद में आवेंगे।” -कमेंट्रेटर ने घोषणा की।
दस ओवर के मैच में टॉस बिलग्राम ने जीता और पहले गेंदवाजी का फैसला किया।विरोधी कैलारस की टीम धुंआधार बैटिंग के लिए क्षेत्र में जानी जाती थी।
कैलारस के बल्लेबाज बिलग्राम के गेंदबाजों की पिटाई कर रहे थे।
दस ओवर में कैलारस ने एक सौ बारह रन बना लिए। मनोज बारहवे खिलाड़ी के रूप में टेंट में बैठा दुखी होता रहा ।
बिलग्राम की तरफ से बल्ले और प्रकाश ने ओपनिंग की। बल्ले ने पहली दो बॉल पर दो चौके जड़ दिए। तभी टेंट में कुछ हलचल हुई।
कमेंटेटर पप्पूसिंह ने उत्साह से घोषणा की -"मुख्य अतिथि एसडीएम साहब आये गये है, मैच रोक दो।
"एसडीएम राघवेंद्र सिंह ने खेल जारी रखने का संकेत आयोजकों को दिया पर पप्पूसिंह ने
बोलना जारी रखा-"देवेन्द्र अग्रवाल एसडीएम साहब को माला पहनाएँ।"

राघवेंद्र सिंह के मना करने पर भी टूर्नामेंट के आयोजक देवेन्द्र अग्रवाल ने इसी उद्देश्य के लिए पास रखी माला उनके के गले में पहना दी।

राघवेंद्र सिंह ने कहा -"अरे भाई मैच जारी रखिये ये स्वागत आवश्यक नहीं है,मैच डिस्टर्ब होता है।"

मुख्य अतिथि राघवेन्द्र सिंह कस्बे के इस मैच को गम्भीरता से ले रहे थे। मनोज आज एसडीएम को नजदीक से देख रहा था। परीक्षा के दिन राघवेंद्र सिंह की नकल रोकने की कार्यवाही से भले ही उसे नुकसान हुआ हो पर उनके दबंग व्यक्तित्व से वह बहुत प्रभावित हुआ था। उसके अभिवादन पर राघवेन्द्र सिंह ने मुस्कुराकर अभिवादन का उत्तर दिया ।

मैच फिर शुरु हुआ। पप्पूसिंह ने खेल को देशभक्ति से जोड़ते हुए मोहम्मद रफ़ी की दो लाइन गा दी -"कर चले हम फ़िदा जान तन साथियो अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।"

राघवेंद्र सिंह को खेल के बीच गाना सुनने से व्यवधान महसूस हुआ

उन्होंने पप्पूसिंह से कहा – "कमेंट्री करो,गाना क्यों गा रहे हो?"

पप्पूसिंह ने आदेश का पालन करते हुए कमेंट्री जारी रखी- "बिलग्राम के दो विकेट गिर गए है। आउट होने वाले खिलाड़ी के खेत में भैंस घुस गई थी इसलिए वे जल्दी में थे। "

राघवेंद्र सिंह इस तरह की कमेंट्री सुनकर आश्चर्यचकित रह गए। उनके चेहरे पर नाराजगी के भाव आ गए । सात ओवर में बिलग्राम के पचपन रन में पांच विकेट हो गए थे। एक तरफ से बल्ले चालीस रन पर अभी भी खेल रहा था पर दूसरी तरफ से विकेट लगातार गिर रहे थे। मनोज को लग रहा था कि इस समय दूसरे छोर पर वह होता तो विकेट बचा सकता था और उसके गाँव की टीम आज जीत सकती थी, लेकिन दस रुपये के अभाव में उसके गाँव का सम्मान आज दांव पर लगा हुआ था ।वह इसी मानसिक जद्दोजहद में था तभी अचानक पप्पूसिंह ने अपना माइक कुछ देर के लिए उसे थमा दिया और बहुत देर से रुकी हुई पेशाब करने चला गया।

मनोज ने माइक पर अपने मन में चल रही उथल पुथल को शब्द देने शुरु किये-"इस समय बिलग्राम की टीम बहुत नाजुक स्थिति में है। कप्तान बल्ले की कमजोर रणनीति उनके लिए परेशानी का कारण बन गई है। उनकी अच्छी बेटिंग के बावजूद दूसरे छोर पर विकेट गिर रहे है। इस समय एक ऐसे बल्लेबाज की जरूरत है जो दूसरे सिरे पर विकेट रोक कर खेल सके। पर बिलग्राम की टीम में रुककर खेलने वाला कोई बल्लेबाज नहीं दिख रहा।"

कमेंट्री का अंदाज बदल चुका था। मजाक और हंसी की जगह अब कमेंट्री गम्भीर और विश्लेषण परक हो रही थी। राघवेंद्रसिंह का ध्यान अचानक बदली कमेंट्री की भाषा और विश्लेषण पर गया। वह इस तरह की कमेंट्री से प्रभावित दिखाई दिए। पप्पू सिंह पेशाब करके वापस आ गया था। उसने मनोज से माइक ले लिया।

तभी राघवेंद्र सिंह ने आदेश के स्वर में पप्पूसिंह से कहा -"उस लड़के को बोलने दो। तुम उधर बैठो।"

मनोज को मैच न खेलने का जो दुःख था वह एसडीएम राघवेंद्र सिंह द्वारा की गई इस तारीफ़ से कम हो गया। उसने मैच खत्म होने तक कमेंट्री जारी रखी।अंतिम विकेट गिर गया।बिलग्राम की टीम हार गई । सर झुकाये बल्ले और दूसरा खिलाड़ी वापस टेंट की तरफ आ रहे थे।

मनोज ने कविता के माध्यम से अपनी कमेंट्री जारी रखी -"लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती , कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। बल्ले ने अपनी टीम को अकेले जिताने की भरपूर कोशिश की इसलिए आज का मैच बल्ले के अकेले संघर्ष के लिए याद किया जाएगा। हार के बावजूद बल्ले के लिए ताली बजनी चाहिए।"

मनोज की कमेंट्री के कारण सभी लोग बिलग्राम की हार को भूल कर बल्ले की बैटिंग पर ताली बजाने लगे।उसने अपनी कमेंट्री से अपने गाँव का सम्मान जौरा में बचा लिया।

दोनों टीमों को प्रमाण पत्र बाटने के बाद एसडीएम राघवेंद्र सिंह ने मनोज से कहा-"तुम अच्छा बोलते हो,क्या नाम है तुम्हारा?"
उसने जवाब दिया -"मनोज कुमार शर्मा।"
बिलग्राम की टीम बल्ले के टेम्पो में बैठकर वापस अपने गाँव की ओर चल दी ।राघवेंद्र सिंह मनोज के दिल पर छा गये। अपनी तारीफ़ के लिए हमेशा लालायित रहने वाले मनोज को आज भरपूर तारीफ़ मिली थी। एक दीवानापन सा उसके दिल पर छा गया था ।

4.

मनोज के पिता ओमवीर शर्मा को गाँव आये हुए एक महीना हो चुका था। वेतन के रुके हुए पैसे मम्मी को मिल गये ।मम्मी ने उधार पटा दिए। लेकिन वह पापा की आदत जानती थी कि उन्हें घर की चिंता कभी नहीं रही। नौकरी पर जाते हैं तो महीनों घर नहीं लौटते। अब घर आये हुए भी उन्हें एक महीना हो गया पर नौकरी पर जाने का नाम नहीं ले रहे हैं। राज्य सरकार के कृषि विभाग में कृषि विस्तार अधिकारी के पद पर क्या इतनी छुट्टी मिलती है कि एक एक महीने नौकरी पर न जाया जाए?
माँ ने एक दिन पिता से ऊँची आवाज में पूछ ही लिया -" अब नौकरी पे कब जाबोगे?"

पिता को नौकरी करने के अपने अंदाज पर किसी का हस्तक्षेप पसन्द नहीं था ।
उन्होंने उसी ऊंचाई के स्वर में माँ को जवाब दिया -"तू काम कर अपना। तू क्या जाने नौकरी कैसे करते हैं ?तेरे खानदान में कौन ने करी है नौकरी ?गंवार। अनपढ़।"

माँ को अपने खानदान पर पिता का यह व्यंग्य पसन्द नहीं आया, उसने जवाब दिया-"मेरे खानदान में तो ना करी। पर तुम कैसी नौकरी कर रहे हो,मैं जानती हूँ। साल साल भर गायब रहते। यहां कौन के भरोसे छोड़ जाते हमें? उधार मांग मांग के घर चला रही हूँ ।"